2

कहानी – शिक्षा का एक रुचिकर माध्यम

रीतू चंद्रा*

चाहे पूर्व-प्राथमिक शिक्षा हो, प्राथमिक शिक्षा हो या फिर जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा ही क्यों न हो कहानी सीखने-सिखाने का एक प्रभावशाली उपकरण है। कहानी सुनना बच्चों को बहुत प्रिय है, यह बच्चों की मनपसंद गतिविधियों में से एक है। कहानी द्वारा बच्चों में सैद्धान्तिक, भाषा, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास आसानी से किया जा सकता है। यह एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा सोचने-समझने की क्षमता का विकास तो होता ही है साथ ही भावनाओं और संस्कारों का आदान-प्रदान भी आसान हो जाता है। कहानियाँ हमें जीवन से जोड़ती हैं और इस प्रकार बच्चों में अन्य लोगों, संस्कृतियों व जातियों के प्रति सम्मान और सकारात्मक दृष्टिकोण की नींव पड़ती है। किसी भी विषय को समझाने में भी कहानी एक सफल भूमिका निभाती है क्योंकि इसमें सूचना के आदान-प्रदान के बहुत से साधनों का प्रयोग होता है जैसे: हाव-भाव, गीत और नाच आदि, जो बच्चों को सक्रिय रखते हैं। इस प्रकार कहानी बच्चों को बाँध कर रखती है, उनमें ध्यान से सुनने और एकाग्र होकर बैठने की आदत पड़ती है जिससे उनकी सुनने की क्षमता का विकास तो होता ही है साथ ही वे घटनाओं के क्रम को समझना, याद रखना और बताना भी सीख जाते हैं। ऐसे में उनकी स्मरण शक्ति, कल्पना शक्ति और ज्ञान का विकास होना स्वाभाविक है। कहानी सुनने से बच्चे नए-नए शब्द सीखते हैं, इससे बच्चों के शब्दकोष में भी वृद्धि होती है, साथ ही साथ उनमें सहानुभूति की भावना और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता का भी विकास होता है। कहानी के द्वारा बच्चों में भविष्य को लेकर नई कल्पनाएँ और महत्वाकांक्षाएँ जन्म लेती हैं जो उनके भावी जीवन की तैयारी में सहायक हो सकती हैं। पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक दोनों ही स्तर पर नैतिक मूल्यों की शिक्षा का भी बड़ा महत्त्व है, ऐसे में

* *सहायक आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली- 110 016

कहानियाँ जो कि सामाजिक मूल्यों पर आधारित होती हैं, बच्चों के सकारात्मक चरित्र निर्माण के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इसी कारण पारंपरिक लोक-कथाओं की महत्ता भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बढ़ जाती है। कहानी शिक्षिका और बच्चों के बीच मधुर संबंध स्थापित करने का भी एक कारगर साधन है।

उद्देश्य

- बच्चों में भाषा का विकास करना
- बच्चों का ज्ञानवर्धन करना
- क्रमबद्ध रूप से सीखना और स्मरण करना
- भावों के बारे में जानकारी देना
- सामूहिक भागीदारी बढ़ाना
- कल्पनाशक्ति व रचनात्मकता का विकास करना
- आत्मविश्वास पैदा करना
- बच्चों को मनोरंजन प्रदान करना
- बच्चों को आस-पास के वातावरण से परिचित कराना
- बच्चों का ध्यान केंद्रित करना

कहानी का चुनाव व कहानी बनाने का तरीका–

- **कहानी का आधार–** कहानी बच्चों की रुचि और आयु के अनुकूल होनी चाहिए। छोटे बच्चों के लिए 4 से 8 पंक्ति की कहानी और 4 से 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए 6 से 12 पंक्ति की कहानियाँ उपयुक्त होती हैं। कहानी के विषय बच्चों के जीवन के अनुभवों से संबंधित होने चाहिए जैसे-पालतू जानवर, फल-सब्जियाँ, पशु-पक्षी, माता-पिता, भाई-बहन, पड़ोसी, मित्र, आदि। कहानी की शुरुआत स्पष्ट और आकर्षक होनी चाहिए। साथ ही कहानी के घटनाक्रम सहज हों, ताकि बच्चों को आसानी से समझ में आ सकें। कहानी का अंत ऐसा हो जिसमें समापन का बोध हो। कहानी में अधिक पात्र और अधिक संवाद भी नहीं होने चाहिए। कहानी का चुनाव करते समय यह ध्यान रखें कि कहानी में हिंसा और मारपीट न हो, नहीं तो बच्चे डर जाएँगे। कहानी बच्चों के साथ मिलकर भी बनाई जा सकती है। इसके लिए शिक्षिका बच्चों को कहानी बनाने के लिए प्रोत्साहित करे। जैसे शिक्षिका कहे कि एक बच्चा था, उसके घर में एक चूहा रहता था। फिर उसी से संबंधित कोई बच्चा दूसरा वाक्य बोले। शिक्षिका प्रत्येक बच्चे को कहानी बढ़ाने के लिए एक-एक वाक्य सोचकर बोलने के लिए प्रेरित करे। इस प्रकार एक नयी कहानी तैयार हो जाएगी और बच्चों में सृजनशीलता का विकास होगा और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।
- **भाषा/शब्द–** कहानी में शब्दों का चुनाव भी बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल होना आवश्यक है। अगर कहानी की भाषा कठिन है, तो कहानी सुनने में बच्चे आनंद नहीं ले सकेंगे। अतः भाषा सरल, स्पष्ट और वर्णनात्मक होनी चाहिए। बच्चों के शब्द-भंडार के विकास के लिए शिक्षिका

कहानी में कुछ नए शब्दों का प्रयोग अवश्य करे। यदि कहानी में संवाद हो तो हर पात्र के अनुरूप आवाज़ बदलना और आवाज़ में उतार-चढ़ाव आना चाहिए, जिससे बच्चों को पता चलेगा की कौन-सा पात्र बोल रहा है। जैसे-भालू और खरगोश की आवाज में अंतर होना चाहिए।

- **नयापन–** कहानी सुनाते समय भाषा, ध्वनि और शैली का प्रयोग बड़े ही अनोखे रूप से करना चाहिए। कहानी के घटनाक्रम को भी रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए। साथ ही कहानी के सार को भी बड़ी ही सूझ-बूझ के साथ व्यक्त किया जाना चाहिए।

कहानी को प्रभावशाली बनाने के तरीके–
शिक्षिका को अपनी कहानी को और भी अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- **ध्वनि-प्रक्रिया–** कहानी सुनाते समय आवाज़ इतनी तेज हो कि सभी बच्चे आसानी से सुन सकें। कहानी के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ शब्दों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए।
- **भाव-भंगिमा/हाव-भाव–** अर्थपूर्ण तरीके से, खुलकर भाव-भंगिमा/हाव-भाव का उपयोग करना चाहिए जिससे बच्चे कहानी में अधिक रुचि लेने लगें।
- **बच्चों से जुड़ाव–** कहानी सुनाते समय बच्चों की एकाग्रता और उनके साथ लगातार आँखों का संपर्क बनाए रखना।
- **चरित्र-चित्रण –** कहानी सुनाते समय प्रत्येक पात्र/चरित्र के अनुसार आवाज़ बदलनी चाहिए, जिससे बच्चों को पता चलेगा की कौन-सा पात्र बोल रहा है।
- **दिलचस्पी बनाए रखना –** कहानी को इस तरह से सुनाया जाना चाहिए कि शुरू से अंत तक बच्चों की दिलचस्पी कहानी में बनी रहे।
- **सहायक सामग्री का प्रयोग –** कहानी को और भी अधिक रोचक और प्रभावी बनाने के लिए यदि आवश्यकता हो तो सहायक सामग्री जैसे: मुखौटे, कठपुतलियाँ (फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट और कागज़ के मिश्रण, दस्तानों व तार से बनी कठपुतलियाँ आदि), कहानी की किताब, कहानी चार्ट, कहानी बॉक्स, फ्लैश कार्ड, चित्र कार्ड, रेत की थाली, नमूना, ऑडियो रिकॉर्डिंग, रेडियो, चादर, खाट एवं दैनिक जीवन की वस्तुएँ आदि का प्रयोग यथास्थान किया जाना चाहिए।
- **शिक्षिका की कुशलता –** शिक्षिका को आराम से, धीमी गति से और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहानी सुनानी चाहिए, ताकि बच्चे कहानी ठीक से सुन सकें। शिक्षिका यह भी ध्यान रखे की उसका पहनावा साधारण हो, ताकि बच्चों का ध्यान भटके नहीं अपितु कहानी पर ही रहे।

कहानी सुनाने की विभिन्न विधियाँ–
कहानी सुनाना एक कला है जिसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह बच्चों

का ध्यान कितना आकर्षित करती है। शिक्षिका कहानी सुनाने के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग कर सकती है।

- **अभिनय द्वारा** – अभिनय द्वारा कहानी सुनाना एक अत्यंत मनोरंजक विधि है। इस विधि में बच्चे और शिक्षिका सभी सक्रिय रुप से कहानी में भाग लेते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और परस्पर सहयोग की भावना का विकास होता है। कहानी में अभिनय शिक्षिका द्वारा, बच्चों द्वारा, शिक्षिका व बच्चों द्वारा मिलजुल कर अन्यथा बाहर से किसी समूह को बुलाकर करवाया जा सकता है। अभिनय द्वारा कहानी सुनाते समय आवाज़ तेज़ और साफ होनी चाहिए।
- **कठपुतलियों द्वारा** – कठपुतलियों द्वारा कहानी सुनाना अपने आप में एक बड़ी ही अद्‌भुत विधि है जो बच्चों को सीखते समय आनंद की अनुभूति करवाती है। कठपुतलियों का प्रयोग कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। इसका प्रयोग करने के लिए किसी भी व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि आवश्यकता है थोड़ा-सा सृजनशील होने की। कठपुतलियों द्वारा कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए-
  - कठपुतली का आकार बड़ा हो।
  - किसी खाट या कुर्सी पर पर्दा लगाएँ।
  - बच्चों को पर्दे के सामने अर्द्धगोलाकार स्थिति में बैठाएँ।
  - निश्चित कर लें कि सभी बच्चे कठपुतली को ध्यान से देख पा रहे हैं।
  - रोचकता लाने के लिए आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाएँ।
- **भाव-भंगिमा/हाव-भाव** – इस विधि में शिक्षिका मौखिक रूप से बच्चों को कहानी सुनाती है। वह आवाज़ बदल कर और भाव-भंगिमा/हाव-भाव द्वारा वर्णन करके किसी भी घटना व संकल्पना का चित्रण करती है।
- **सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा** – सहायक सामग्री जैसे- मुखौटे, कठपुतलियाँ (फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट और कागज़ के मिश्रण, दस्तानों व तार से बनी कठपुतलियाँ आदि), कहानी की किताब, कहानी चार्ट, कहानी बॉक्स, फ्लैश कार्ड, चित्र कार्ड, रेत की थाली, नमूना, ऑडियो रिकॉर्डिंग, रेडियो, चादर, खाट एवं दैनिक जीवन की वस्तुएँ आदि ऐसी सामग्री हैं, जिनकी सहायता से यदि कहानी सुनाई जाए तो कहानी का प्रभाव और भी बढ़ जाता है। सहायक सामग्री द्वारा कहानी सुनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए-
  - कहानी की किताब, फ्लैश-कार्ड, कहानी-चार्ट, चित्र-कार्ड आदि में पृष्ठों की संख्या लगभग 10-12 से अधिक ना हो।
  - फिंगर पपेट, स्टिक पपेट, छाया पपेट, कहानी बॉक्स, कहानी की किताब, फ्लैश-कार्ड, कहानी-चार्ट, चित्र-कार्ड आदि में चित्र बड़े बने हों।

- कठपुतलियाँ, कहानी बॉक्स, कहानी की किताब, फ्लैश-कार्ड, कहानी-चार्ट आदि बच्चों की आँखों के स्तर पर रखें अन्यथा अधिक ऊँचाई होने से बच्चे ठीक से नहीं देख पाएँगे।
- ऑडियो रिकॉर्डिंग और रेडियो की आवाज़ स्पष्ट और तेज़ होनी चाहिए।
- सभी प्रकार की सामग्री बच्चों के दृष्टिकोण से सुरक्षित और मजबूत होनी चाहिए।

- **सचित्र पुस्तकों से पढ़ कर कहानी सुनाना** – इस विधि में शिक्षिका पुस्तक से पढ़ कर कहानी सुनाती है और बच्चे ध्यानपूर्वक कहानी सुनते हैं।
- **बच्चों को स्वयं कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करना** – जैसा कि विदित है कि बच्चे स्वयं करके सीखते हैं इसलिए बच्चों को स्वयं कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें, इससे बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होता है। अच्छा यह होगा की बच्चों को उन्हीं के द्वारा सुनी-बुनी कहानियाँ सुनाने के पर्याप्त अवसर दें।

कहानी सुनाते समय ध्यान देने योग्य जरूरी बातें –

- कहानी सुनाते समय बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें शिक्षिका सभी बच्चों को आसानी से देख सके और प्रत्येक बच्चा भी शिक्षिका के हाव-भाव को आसानी से देख व सुन सके।
- कहानी सुनाते समय शिक्षिका बच्चों को अर्द्ध-घेरे में अपने पास ही बैठाए। शिक्षिका और बच्चों में ज़्यादा दूरी नहीं होनी चाहिए।
- कहानी सुनाने से पूर्व शांत खेल द्वारा वातावरण का निर्माण करें।
- सरल शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें।
- कहानी की विषय-वस्तु के अनुसार उचित हाव-भाव तथा आरोह-अवरोह का ध्यान रखें।
- कहानी के बीच में छोटे-छोटे प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को भी कहानी से जोड़ने का प्रयास करें।
- बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार कहानी को छोटा या बड़ा रूप स्वयं दें।
- सुनाई गई कहानियों पर बच्चों से अभिनय भी करवाएँ।
- कहानी में मुखौटे का प्रयोग कर रहे हैं तो सुनिश्चित कर लें कि वे ठीक प्रकार से बने हों। यदि मुखौटे का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो भावों पर ध्यान दें।
- कहानी में यदि विशेष प्रकार की पोशाक पहनी जानी है तो सुनिश्चित कर लें कि वह आरामदेह हो।

इस प्रकार यदि शिक्षा को कहानी से जोड़कर देखा जाए तो लगता है जैसे संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया ही मनोरंजन से पूर्ण हो गयी हो, जहाँ खुशनुमा माहौल में मानो सीखना-सिखाना अब और भी आसान हो गया हो।